शिव तांडव स्तोत्र (जटाटवीगलज्जल) अर्थ सहित: पूरे 17 श्लोक, हिंदी अर्थ और पाठ विधि

26 नवंबर 2026 • पढ़ने में 14 मिनट स्तोत्र शिव भक्ति

शिव तांडव स्तोत्र परंपरा में लंकापति **रावण** की रचना माना जाता है: शिव के प्रचंड तांडव, उनके रूप और उनकी कृपा की स्तुति। इसकी लय डमरू की तरह चलती है ("डमड्डमड्डमड्डमन्"), इसीलिए यह सबसे लोकप्रिय शिव स्तुतियों में है। नीचे सभी 17 श्लोक, हर श्लोक का सरल हिंदी अर्थ, और पाठ की विधि है।



शिव-पार्वती, पहाड़ी चित्रकला (public domain, Wikimedia Commons)

शिव तांडव स्तोत्र: पूरा पाठ (8 लिपियों में)

देवनागरी | English | বাংলা | ଓଡ଼ିଆ | తెలుగు | ಕನ್ನಡ | മലയാളം | தமிழ்

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-

प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।

भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः

श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥ ५ ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-

निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।

सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं

महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-

द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-

प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७ ॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-

कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-

वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-

रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं

गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्-

विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।

धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-

ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-

र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।

तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्

विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।

विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः

शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३ ॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-

निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।

तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं

परश्रियः परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥ १४ ॥

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारणी

महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।

विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः

शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं

पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं

विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥ १६ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं

यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां

लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १७ ॥

लिपि बदलने से शब्द नहीं बदलते: वही संस्कृत पाठ, आपकी लिपि में (अक्षर-से-अक्षर रूपांतरण)। तमिल में छोटे अंक संस्कृत ध्वनियाँ दिखाते हैं। आवाज़ आपके फ़ोन/कंप्यूटर की अपनी मशीन-आवाज़ है; सही उच्चारण के लिए हमारे वीडियो सुनें।

सुनें (पंक्ति-दर-पंक्ति) ■ रोकें गति सामान्य

श्लोक और हिंदी अर्थ

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं

चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥

अर्थ (1): जिनकी जटाओं के वन से बहती गंगा की धारा से पवित्र हुए गले में सर्पों की लंबी माला लटक रही है, जिनका डमरू "डम-डम" बज रहा है, जिन्होंने प्रचंड तांडव किया, वे शिव हमारा कल्याण करें।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-

विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।

धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके

किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ २ ॥

अर्थ (2): जटाओं के कड़ाहे में घूमती गंगा की चंचल लहरों से जिनका सिर शोभित है, जिनके ललाट पर अग्नि धधक रही है, जिनके सिर पर बाल चंद्रमा है, उन शिव में मेरा प्रेम हर क्षण बना रहे।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-

स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि

क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

अर्थ (3): पर्वतराज की पुत्री पार्वती की लीलाओं से जिनका मन आनंदित रहता है, जिनकी कृपा-दृष्टि से कठिन से कठिन विपत्ति रुक जाती है, उन दिगंबर शिव में मेरा मन आनंद पाए।

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-

कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।

मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

अर्थ (4): जटाओं के सर्पों के फनों की मणियों की पीली आभा से दिशाओं के मुख मानो कुमकुम से रंगे हैं, जिन्होंने मदमस्त हाथी (गजासुर) की खाल ओढ़ी है, उन भूतनाथ में मेरा मन अद्भुत आनंद पाए।

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥ ५ ॥

अर्थ (5): इंद्र आदि सब देवताओं के सिर से गिरे फूलों की धूल से जिनकी चरण-पीठ धूसर है, सर्पराज की माला से जिनका जटाजूट बँधा है, वे चंद्रशेखर शिव हमें चिरकाल तक श्री (कल्याण और समृद्धि) दें।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ ६ ॥

अर्थ (6): जिन्होंने ललाट की अग्नि की चिंगारी से कामदेव (पंचबाण) को भस्म कर दिया, जिन्हें देवराज इंद्र नमन करते हैं, जिनका मस्तक चंद्रमा की कला से शोभित है, वे जटाधारी कपाली शिव हमें संपदा दें।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-

प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७ ॥

अर्थ (7): जिन्होंने अपने विकराल ललाट पर धधकती अग्नि में प्रचंड कामदेव की आहुति दे दी, और जो पार्वती के श्रृंगार की चित्रकारी के अद्वितीय कलाकार हैं, उन त्रिनेत्र शिव में मेरा प्रेम हो।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-

कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

अर्थ (8): नए बादलों से घिरी अमावस्या की आधी रात के घने अंधेरे जैसा जिनका कंठ है, जो गंगा को धारण करते हैं, गज-चर्म ओढ़ते हैं, चंद्रमा से सुंदर हैं और जगत का भार उठाते हैं, वे शिव हमें श्री दें।

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-

वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अर्थ (9): खिले हुए नीले कमल जैसी कालिमा से जिनका कंठ शोभित है; जिन्होंने कामदेव, त्रिपुर, संसार-बंधन, दक्ष का यज्ञ, गजासुर, अंधकासुर और यमराज तक का अंत किया, उन शिव को मैं भजता हूँ।

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-

रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं

गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

अर्थ (10): सर्वमंगला पार्वती की कलाओं रूपी कदंब-मंजरी के मधुर रस के जो भौंरे हैं; काम, त्रिपुर, भव, यज्ञ, गज, अंधक और अंतक (यम) का अंत करने वाले उन शिव को मैं भजता हूँ।

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्-

विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।

धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-

ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

अर्थ (11): जिनके ललाट की अग्नि तेज़ी से घूमते सर्पों की फुफकार से और भड़कती है, और मृदंग की "धिमि-धिमि" मंगल ध्वनि की ताल पर जिनका प्रचंड तांडव चलता है, उन शिव की जय हो।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-

र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।

तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ १२ ॥

अर्थ (12): पत्थर और सुंदर शय्या में, सर्प और मोतियों की माला में, बहुमूल्य रत्न और मिट्टी के ढेले में, मित्र और शत्रु में, तिनके और कमल में, प्रजा और राजा में: सबमें समान भाव रखकर मैं कब सदाशिव को भजूँगा?

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्

विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।

विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः

शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३ ॥

अर्थ (13): कब मैं गंगा के किनारे किसी कुंज में रहते हुए, बुरे विचारों से मुक्त होकर, सिर पर अंजलि बाँधे, चंचल दृष्टि छोड़कर, शिव के ललाट पर ध्यान लगाए "शिव" मंत्र जपता हुआ सुखी होऊँगा?

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-

निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।

तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं

परश्रियः परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥ १४ ॥

अर्थ (14): (भावार्थ) देवांगनाओं के जूड़ों में गुँथे मल्लिका के फूलों से झरते मधु जैसी मनोहर, परम श्री के धाम शिव के अंगों की कांति: दिन-रात हमारे मन को आनंद दे।

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारणी

महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।

विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः

शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥

अर्थ (15): (भावार्थ) प्रचंड वडवानल जैसी शुभ आभा फैलाने वाली, अष्ट सिद्धियों द्वारा गाई गई, शिव-पार्वती विवाह के समय की मंगल ध्वनि, जो "शिव" मंत्र से सजी है: वह जगत की विजय के लिए हो।

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं

पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।

> हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
>
> विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥ १६ ॥

अर्थ (16): जो मनुष्य इस उत्तम स्तोत्र को नित्य पढ़ता, याद करता और बोलता है, वह सदा शुद्ध होता है और जल्दी ही गुरु रूप हर (शिव) में भक्ति पाता है; उसकी और कोई गति नहीं होती। शंकर का चिंतन ही प्राणियों का मोह दूर करता है।

> पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
>
> यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
>
> तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
>
> लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १७ ॥

अर्थ (17): (फलश्रुति) जो प्रदोष के समय पूजा के अंत में दशमुख रावण द्वारा गाए इस शिव-पूजन स्तोत्र को पढ़ता है, शंभु उसे रथ, हाथी और घोड़ों से युक्त स्थिर लक्ष्मी देते हैं।

पाठ कैसे करें

- फलश्रुति के अनुसार **प्रदोष के समय, पूजा के अंत में** पाठ का विशेष महत्व है।
- लंबे समास (जुड़े हुए शब्द) धीरे-धीरे, टुकड़ों में पढ़ें; पहले अर्थ पढ़ लें, फिर पाठ करें।
- सोमवार, प्रदोष और महाशिवरात्रि पर विशेष रूप से।

🎧 शिव भक्ति के लिए अपनी आवाज़ में: ॐ नमः शिवाय 1008 बार, गिनती के साथ

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

शिव तांडव स्तोत्र किसने लिखा?
परंपरा में लंकापति रावण ने; ग्रंथ की अंतिम पंक्ति भी कहती है "इति रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रम्"।

शिव तांडव स्तोत्र का पाठ कब करें?

फलश्रुति के अनुसार प्रदोष के समय, पूजा के अंत में; सोमवार और महाशिवरात्रि पर भी।

इसमें कितने श्लोक हैं?

16 श्लोक और एक फलश्रुति, कुल 17।

🔱 कथा, जाप और स्तोत्र अपनी आवाज़ में: शिव कैलाशा YouTube चैनल

रोज़ एक कथा या जाप WhatsApp पर: शिव कैलाशा WhatsApp चैनल से जुड़ें